पूर्वी राजस्थान के 'लोक वृन्दगायन एवं लोकनाट्य प्रधान' गायकी में निहित सांगीतिक एवं साहित्यिक तत्वों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

दयालबाग़ शिक्षण संस्थान (डीम्ड विश्वविद्यालय)
दयालबाग़, आगरा
की
पी–एच. डी. (संगीत गायन)
उपाधि हेतु शोध प्रबन्ध
की

रूपरेखा

2009

निर्देशिका

डॉ0 (श्रीमती) सुधा सहगल
एसो0 प्रो0, संगीत गायन
संगीत विभाग

शोधार्थिनी

सोनिया करौला
(संगीत गायन)
संगीत विभाग

प्रमुख
कला संकाय

एवं

विभागाध्यक्ष
संगीत विभाग

दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड विश्वविद्यालय) दयालबाग़, आगरा

पूर्वी राजस्थान के 'लोक वृन्दगायन एवं लोकनाट्य प्रधान' गायकी में निहित सांगीतिक एवं साहित्यिक तत्वों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

भूमिका –

राजस्थान सांस्कृतिक लोककलाओं का समृद्ध प्रदेश है और लोक कलाओं मे लोकनाट्य तो सांस्कृतिक धरोहर की भांति अत्यन्त चमत्कृत रूप से यहां व्यवहृत होते है तथा इनमें लोक संस्कृति के जितने विविध, भव्य व बहुरंगी रूप इस क्षेत्र में देखने में आते हैं उतने सम्भवतः ही कहीं दृष्टव्य हों। ये व्यवहृत लोकनाट्य ख्यालों के रूप में माने जाते हैं जिनमें राजस्थान की पारम्परिक संस्कृति, संगीत की विविध धाराएं, नाट्य के चहुंमुखी आयाम विश्व विख्यात हैं। इन्हीं लोकनाट्यों में पूर्वी राजस्थान के लोकनाट्यों की अपनी विशेषता है।

वैसे तो राजस्थान लोककलाओं के लिए विश्वविख्यात है, किन्तु इन लोककलाओं में लोक वृन्दगायन तथा लोकनाट्यों का अपना ही महत्व है। लोकनाट्यों में **'ख्याल'** तथा लोक वृन्दगायन में **'निर्गुण लोक वृन्दगायन'** सर्वाधिक प्रसिद्ध हैं। ख्यालों में **कूचामणी, चिड़ावी, शेखावाटी, जयपुरी, हेला ख्याल** का विशेष स्थान है इसी प्रकार लोक वृन्दगायन में रंगतों व रम्मतों में **बीकानेरी, जैसलमेरी, सांगानेरी, हाड़ौती और मेवाड़ी रम्मतें** प्रभावशाली होती है, किन्तु पूर्वी राजस्थान एक ऐसा स्थान है जहां लोक वृन्दगायन एवं लोकनाट्य के विविध स्वरूप देखने को मिलते हैं। **लोकनाट्य में जयपुर का तमाशा , अलवर / मुन्डावर का अलीबख्शी ख्याल एवं संगीत दंगल, चित्तौड़गढ़ का माच तथा नौटंकी प्रसिद्ध है तथा लोक वृन्दगायन में हेला ख्याल, जिकड़ी, कन्हैया, पदगायन, संगीत दंगल, ढप्पाली राग , होली पर्व पर गेय बम रसिया तथा निर्गुण वृन्दगायन प्रसिद्ध है।** इन सभी लोक वृन्दगायन शैलियों का लोकनाट्यों के क्षेत्र एक दूसरे के निकट होते हुए भी सभी में **सांगीतिक प्रयोग, मंच प्रदर्शन, संगीत–संयोजन, कथावस्तु, संवाद–कथन, पात्राभिनय, वाद्यों का प्रयुक्तीकरण**

भिन्न–भिन्न है। पूर्वी राजस्थान के लोकनाट्यों में भरतपुर का क्षेत्र ब्रज प्रदेश के निकट होते हुए ब्रज की नौटंकी एवं रास से प्रभावित है, किन्तु कथावस्तु एवं भाषा प्रयोग में राजस्थानी प्रभाव भी है। जयपुर का तमाशा तो सभी लोकनाट्यों से भिन्न है। जयपुर के तमाशे में गायन, वादन, अभिनय का सुन्दर मिश्रण तो होता ही है, साथ ही उसमें गंभीर नाट्य अनुभूति और गरिमा भी होती है। तमाशे के पात्र शास्त्रीय एवं अर्द्धशास्त्रीय धुनों पर आधारित विशेष गायकी में प्रवीण कलाकार होते है। इस प्रकार महाराष्ट्र के तमाशे से सर्वथा भिन्न जयपुर का तमाशा इन विशेषताओं के कारण ही विश्वविख्यात है। पूर्वी राजस्थान के लोक वृन्दगायन में **जयपुर से मात्र 60 कि. मी. की दूरी पर लालसोट में हेला ख्याल का मंचन राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर** पर होता है, जिसमें 80 से 100 के बीच कलाकार एक ही मंच पर सामूहिक गान से लोक वृन्दगायन को शास्त्रीय रागों में निबद्ध करके प्रस्तुत करते है। अलवर / मुन्ड़ावर का **अलीबख्शी ख्याल** अपने उपशास्त्रीय संगीत के लिए सर्वथा अनूठा है। **बरनाला का निर्गुण** लोक वृन्दगायन भी विशेष रूप से जाना जाता है। ये वृन्दगान के रूप में निर्गुण जोगियों द्वारा लोकधुनों पर आधारित गायी जाने वाली धार्मिक रचनाऐं होती है तथा इनका प्रदर्शन धार्मिक उत्सवों, समारोह, में सम्पूर्ण रात्रि किया जाता है।

सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि पूर्वी राजस्थान के लोकनाट्यों तथा लोक वृन्दगायन पर निश्चित रूप में कोई काम नहीं हुआ। **जयपुर का तमाशा** यद्यपि अत्यन्त प्रसिद्ध है, किन्तु तमाशा परिवार द्वारा प्रकाशित एक या दो पुस्तकों के अतिरिक्त कोई पुस्तक उपलब्ध नहीं है। इसी प्रकार **हेला ख्याल** पर कतिपय समाचार पत्रों, पत्रिकाओं में यदा–कदा विवरण प्राप्त होते हैं, किन्तु कोई पुस्तक आज तक प्रकाशित नहीं हुई। भरतपुर की नौटंकी तथा रास पर भी कोई साहित्य उपलब्ध नहीं है। अलवर के अलीबख्शी ख्याल पर एक पुस्तक **'लोककवि एवं नाट्यकार अलीबख्श' डॉ. अनीता भारद्वाज** द्वारा प्रकाशित हुई है, किन्तु इसमें संगीत से सम्बन्धित विवरण नगण्य ही है, इसी प्रकार बरनाला की लोक वृन्दगायन

जयपुर के दूरस्थ ग्रामीण इलाकों में प्रयुक्त होती है इसके संदर्भ में भी यदा–कदा समाचार पत्रों में ही प्रकाशित होते है तथा निश्चित रूप से इस लोक निर्गुण वृन्दगायन पर कोई भी साहित्य उपलब्ध नहीं है अतः उपर्युक्त सभी लोक वृन्दगायन शैलियों तथा लोकनाट्यों में प्रयुक्त होने वाले सांगीतिक तथा साहित्यिक तत्वों को गहनता से जानने तथा एक सूत्र में पिरोने के लिए शोधकर्त्री द्वारा निम्नलिखित विषय को शोध हेतु चयनित किया गया है ।

विषय –

पूर्वी राजस्थान के 'लोक वृन्दगायन एवं लोकनाट्य प्रधान' गायकी में निहित सांगीतिक एवं साहित्यिक तत्वों का विश्लेषणात्मक अध्ययन।

अध्ययन के उद्देश्य–

- ❖ राजस्थान के लोक वृन्दगायन/लोकनाट्यों की ऐतिहासिकता को खोजना।
- ❖ लोक वृन्दगायन/लोकनाट्यों में निहित सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य को प्रकाश में लाना।
- ❖ लोक वृन्दगायन हेलाख्याल, बरनाला के निर्गुण भजन /लोकनाट्य अलीबख्शी ख्याल, नौटंकी, रास, तमाशा के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक तथ्यों को खोजना।
- ❖ लोकनाट्य अलीबख्शी ख्याल, तमाशा तथा लोक वृन्दगायन हेलाख्याल , निर्गुण भजन से सम्बन्धित संगीतात्मक तत्त्वों को प्रकाश में लाना।
- ❖ ख्याल की **नाट्य सम्बन्धी विशेषता** को उजागर करना।
- ❖ लोकवृन्दगान/लोकनाट्य में निहित **संगीतात्मक रचनाओं की स्वरलिपियां** निर्मित करना।

विषय का परिसीमांकन–

समय एवं कार्य सीमा को देखते हुए प्रस्तावित शोध प्रबन्ध का कार्य क्षेत्र केवल **पूर्वी राजस्थान** तक ही सीमित किया जायेगा।

कार्य विधि एवं उपकरण–

शोध प्रबन्ध हेतु सर्वेक्षण साक्षात्कार एवं विवरणात्मक कार्य विधि प्रयुक्त की जायेगी, उपर्युक्त कथित विधियों के लिए **टेपरिकॉर्डर, कैमरा, वीडियो–कैमरा** जैसे उपकरणों का प्रयोग किया जायेगा।

अध्ययन के स्त्रोत–

प्रस्तावित शोध प्रबन्ध हेतु पुस्तकालयों जैसे **दयालबाग शिक्षण संस्थान दयालबाग़, आगरा, आगरा विश्वविद्यालय, राजस्थान विश्वविद्यालय, जवाहर कला केन्द्र, राधाकृष्णन् पुस्तकालय, जयपुर** से सामग्री खोजकर एकत्रित की जायेगी तथा **अलवर, भरतपुर, लालसोंट व बरनाला** के लोकगायकों, लोकनाट्यकारों से **साक्षात्कार** के आधार पर जानकारी एकत्रित की जायेगी। विभिन्न **पत्र–पत्रिकाओं** से भी सामग्री एकत्रित की जायेगी।

अध्ययन के प्रस्तावित शोध हेतु अध्यायों का विभाजन

प्राक्कथन

1. **प्रथम अध्याय**

   अ– राजस्थान का ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक परिचय

   ब– वर्तमान राजस्थान का परिचय

   स– लोकवृन्दगायन तथा लोकनाट्य की ऐतिहासिकता

2. **द्वितीय अध्याय**

   अ– लोकवृन्दगायन : हेलाख्याल एवं निर्गुण भजन

   ब– लोकनाट्य : जयपुरी तमाशा, अलीबख्शी ख्याल

3. **तृतीय अध्याय**

   अ– निर्गुण भजन का साहित्यिक एवं सांगीतिक अध्ययन

   ब– हेलाख्याल में निहित साहित्यिक एवं सांगीतिक तत्त्व

   स– पूर्वी राजस्थान के लोकवृन्दगायन में मंच प्रस्तुतिकरण का तात्त्विक विवेचन

   द– पूर्वी राजस्थान की लोकवृन्दगायन शैलियों का तुलनात्मक अध्ययन

4. **चतुर्थ अध्याय**

   अ– पूर्वी राजस्थान के लोकनाट्य में निहित साहित्यिक पक्ष

   ब– पूर्वी राजस्थान के लोकनाट्य में निहित सांगीतिक पक्ष

   स– पूर्वी राजस्थान के लोकनाट्यों में निहित नाट्य सम्बन्धित तत्त्व

   द– पूर्वी राजस्थान की लोकनाट्य शैलियों का तुलनात्मक अध्ययन

5. **पंचम अध्याय**

   लोकवृन्दगायन/लोकनाट्य की कतिपय साहित्यिक रचनाएं एवं स्वरलिपियाँ

निष्कर्ष

संदर्भ ग्रन्थ सूची

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. राजस्थान की सांस्कृतिक परम्परा– डॉ. जयसिहं नीरज– संस्करण– 1969

2. लोकसाहित्य सिद्धान्त और प्रयोग– डॉ. श्रीराम शर्मा

3. राजस्थान– इतिहास एवं संस्कृति– डॉ. हुकमचन्द्र जैन– संस्करण– सितम्बर 2008

4. रंगमंच नया परिदृश्य– डॉ. रीतारानी पालीवाल– संस्करण– 1992

5. राजस्थान के लोकनाट्य में रंगमंच– केतकी रानावत– प्रकाशन कृष्ण ब्रदर्स, अजमेर

6. भारतीय लोकनाट्य– डॉ. वशिष्ठ नारायण त्रिपाठी– प्रकाशन– वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

7. राजस्थान के भक्ति प्रधान ख्याल– डॉ. कुशल राज उपाध्याय– प्रकाशन साहुदयाल पब्लिशर्स, दिल्ली

8. राजस्थान के लोकनाट्य– डॉ. निर्मला पाण्डेय– प्रकाशन– गोपाल पब्लिशर्स, दिल्ली

9. लोकनाट्यों में संगीत– डॉ. श्री ज्ञानवती वेद मेहता, प्रकाशन विकास, बीकानेर

10. जयपुर तमाशा– वासुदेव भट्ट– संस्करण– 1993

11. अलंकार पारिजात – नरोत्तम दास स्वामी, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल – संस्करण – 1957

12. पत्रिका – थावर– जयपुर

13. दैनिक भास्कर– 11 सितम्बर 2000, जयपुर

14. लोककवि एवं नाट्यकार अलीबख्श– डॉ. अनीता भारद्वाज